विचार बिन्दु

जिस काम की तुम कल्पना करते हो उसमें जुट जाओ। साहस में प्रतिभा, शक्ति और जादू है। साहस से काम शुरू करो पूरा अवश्य होगा। -अज्ञात

पसीने से गढ़े गए बाँध की स्मृति

विद्यालयों महाविद्यालयों में गर्मियों की छुट्टियाँ थीं। परीक्षा के बाद का आनंद था। परिणाम की प्रतीक्षा। इस पार कि उस पार। गाँव की दोपहरें तपकर तपाती। हवा आग की लपट जैसी। लुआर चलाती। धरती की साँस सूखी और भारी। ढर्रे और पगडंडियों पर पर पाँव रखना कठिन, जैसे अंगारे पर चलना हो। खेतों में लाल-भूरी मिट्टी फटकर खुल गई थी। दरारें इतनी चौड़ी थीं कि उनमें कोई चिड़िया उतर जाए तो लौट न पाए। हर दरार के भीतर सोई हुई प्यास थी, जैसे पानी मांग-मांग कर थक रही हों। एक बार की खेती कट चुकी थी दरारें नहीं ढेले और कटी फसल की रह गई डंडियाँ सूखकर जमीन से लग गई थीं। कुओं का पानी कम हो गया था।यह कोई 50 साल पहले की बात की बात है।

नरो पहाड़ का दुर्भाग्य यह रहा कि उसके आसपास हमेशा गरीब लोग बसे। खेत छोटे थे, बरसात पर टिके हुए। नहरें बहुत देर से पहुँचीं, तब भी अधूरी। पानी की असली आस तो बरसात ही थी-तालाबों में भरता जल,कुओं में उतरता, खेतों में बहता। तालाब जीवन के थाल जैसे थे, जिनमें वर्षा का जल रखा जाता था। अन्न ही रखा मानिए। मैंने पहाड़ को कई सालों तक अपनी आँखों से देखा। पगडंडियों पर चलते-चलते,जंगल को नापते-नापते। उस समय पहाड़ भरा-पूरा था। वृक्षों की भरमार। ऊँचे-ऊँचे, गहरे और छायादार। उनके बीच मध्यम कद के वृक्ष और झाड़ियाँ भी, जिनमें छोटे जीव छिपते, पक्षी बैठते। पहाड़ की साँस हरी थी, और हर साँस में जीवन का संगीत था।

पहाड़ बड़े बीजों वाले वृक्षों के लिए प्रसिद्ध था। उनके बीज ऐसे कि धरती में गिरें तो जैसे धरती ने कोई गर्भ धारण किया हो। उन्हीं पर पूरा वन टिका था। उन्हीं के बीच घूमते थे सांभर, भालू, कलमुंहा लंगूर, बंदर, खरहा, मोर। बड़े वृक्षों के कोटर उल्लुओं का घर थे। शाम ढलते ही सियारों की आवाज़ गूँजती। जंगल का अंधकार उनकी बोली से भर जाता। जंगली सूअर रात होते ही खेतों में उतरते और किसान अपनी फसलों को बचाने के लिए खेतों में रातभर बने रहने को मजबूर होते। घ्वांपे भरे रहते, धुएँ में मनुष्य और पशु साथ-साथ साँस लेते।

नरो पहाड़ का समय बदल गया। धीरे-धीरे बड़े जानवर गए। शिकार ने उन्हें मिटा दिया। उनके जाने के साथ ही बड़े बीज वाले वृक्षों का भविष्य भी सूख गया। जंगल का वह चक्र, जिसमें प्राणी और वृक्ष एक-दूसरे को जन्म देते रहते थे, टूट गया। जो पुराने विशाल वृक्ष बचे थे, वे लकड़ी बनकर शहर चले गए। छोटे वृक्ष कस्बों के चूल्हों की आग में जल गए। गरीब आबादी ने अपनी भूख मिटाने के लिए पहाड़ को अपना साधन बनाया और उसी साधन को धीरे-धीरे नष्ट कर दिया। कभी जो पहाड़ घनेपन से साँस लेता देता था, अब उसकी साँस टूट-टूटकर आती है। कभी जो झूमते वृक्ष थे, अब सूखे ठूंठ खड़े हैं। कभी जहाँ हिरन दौड़ते थे, अब चराई और खनन की धूल उड़ती है।

फिर भी, नरो पहाड़ की मिट्टी में कहीं न कहीं वह हरा सपना दबा हुआ है। कोई बीज अब भी इंतज़ार कर रहा है कि उसके ऊपर आकाश झुके और पानी बरसे। कोई उल्लू अब भी टूटी शाख पर बैठकर अंधेरे में बोलता है। पहाड़ पूरी तरह गया नहीं है। वह मौन में छिपा हुआ है-जैसे स्मृति, जैसे ध्वंस के भीतर जीवन का छिपा बीज हो।

इसी उजाड़ पहाड़ के पास बाँध बन रहा था। बाँध-जिसका सपना पानी था,और हक़ीक़त मिट्टी और पत्थर थी। गाँव वालों ने ठाना था पंचायत से ठनवाया था-बरसात अगर यूँ ही बह निकली तो जीवन बचेगा नहीं। कुएँ सूख जाएँगे,खेत मैदान हो जाएँगे,बच्चे और मवेशी प्यास से मरेंगे। पुराने तालाब हैं पर पानी कम पड़ने लगा। बाँध एक उम्मीद। पानी को रोकना था, रोककर बाँटना था, बाँटकर जीना था। धूप पैंतालीस डिग्री की। मजदूर एक-एक पत्थर उठाकर बाँध में सजाते। कोई पसीने से भीगा, कोई सिर पर गीला गमछा बाँधे। उनकी पीठ पर पसीने की धाराएँ बहतीं। पैरों में छाले। होंठ फटे। आँखें लाल। लेकिन चेहरों पर एक ज़िद-जैसे वे पत्थर नहीं, आने वाले पानी की गठरी उठा रहे हों। कभी किसी पत्थर के नीचे से बिच्छू निकल आता। मजदूर ठिठकते, फिर आगे बढ़ जाते। डर और ज़हर, भूख और प्यास के सामने मामूली थे।

मैं भी जाता था। मेरी मज़दूरी छोटी रही होगी। मेरे लिए बड़ी। एक पत्थर उठाना,सर में ढोना। एक तगाड़ी मिट्टी खोदना सर पर ढोना-ऐसे ही सभी काम थे। हाथों में छाले, हथेलियाँ खुरदरी। कभी खून की बूँद रिस जाती। लगता था पर शायद ठीक से खून नहीं निकालता रहा होगा। मैं छिपा लेता। मुझे लगता कि मेरी हथेलियों में भी बाँध छप गया। पत्थर सिर पर रखते ही लगता मानो पूरा आसमान उठाकर ले जाया जा रहा है। आसमान तन कर बैठ गया हो। मैं लड़खड़ाता। बाकी साथी मजदूर हँसते और कहते-पत्थर भी आदमी है, उसे भी धीरे से बिठाओ। तब मैं सोचता-क्या सचमुच पत्थर आदमी हैं?या आदमी पत्थर हो चुके हैं? धीरे-धीरे मैंने मिट्टी खोदना सीखा। फावड़ा गाड़ना, शरीर का सारा भार उसमें नहीं डालना। ताकत से पटक कर गाड़ देना, फिर ऊपर डंडे से उठा देना। मिट्टी निकलती। जलते हुए कण बिखरते। उसे ढोकर बाँध में डालना होता। कभी ढेर गलत जगह गिर जाता तो मजदूर हँसते। कहते-धरती भी आदमी को धीरे-धीरे सिखाती है। जेब में कभी-कभी मजदूरी के नाम पर सिक्के मिलते। एकाध नोट भी। बिलकुल कड़क नोट। संभलकर और संभालकर रखना होता था। उन्हें खर्च में नहीं उड़ा सकते। बस जेब में हाथ डालकर पैसे खनक सुननी होती। नोट को खड़खड़ाना नहीं थथोलना होता है। मेहनत की आवाज़ इतने में आ जाती थी।

> **गर्मी चरम पर थी। कुएँ सूख चुके थे। औरतें घड़ों के लिए झगड़तीं। जानवर जीभ बाहर निकालकर हाँफते। आसमान नीला और कठोर। फिर एक दिन आसमान ने करवट बदली। बादल घिर आए। हवा बदल गई। मिट्टी में भीगने की गंध फैल गई। मजदूर आसमान की ओर देखने लगे। किसी ने दोनों हाथ जोड़ दिए। पहली बूंद गिरी। पत्थर पर पड़ी और बाँध ने साँस ली। फिर दूसरी, तीसरी... और अचानक मूसलाधार बारिश। लोग नाचने लगे।**

दोपहर में सब साथ बैठते। सब साथी मजदूर मोटी रोटियाँ लाते। किसी के पास प्याज़,किसी के पास नमक की डली। अदला-बदली भी कर लेते प्रेम से। मैं भी रोटियाँ निकालता। हम सब मिलकर खाते। पसीने और धूल की गंध, और रोटी का स्वाद मिलकर एक अलौकिक तृप्ति देते। पानी घर से ही लाते। घूँट दो घूँट में काम चलाते। बस,गला न सूखे। यह ध्यान रखना होता। लुआर भी चलती थी न। लुआर लग जाए तो फिर अगले दिन कैसे आते। मूड़े में मोटी ढट्टी बाँध कर रखते।

पास ही छूले के ठूँठ से नई कोमल पत्तियाँ फूट आई थीं। उन्हीं की छाया में कभी कभी बैठते। तुलसीदास जी की चौपाई जोर जोर से गाते -जो अति आतपब्याकुलहोई। तरु छाया सुख जानइसोई।।-धूप में तपती धरती पर यह छोटी छाया किसी सुन्दर स्वर्ग का ठंडा टुकड़ा होती। कोई मजदूर गीत उठाता-धरती, बैल, और पानी के। कोई हँसी उड़ाता। धूप थोड़ी हल्की हो जाती। अरे नहीं,हल्की नहीं होती, हल्की नहीं होती,हल्की लगती रही होगी। खाने के बाद गर्मी की घनघोर धूप हल्की लगती होगी। भरे पेट लुआर भी नहीं मारती। बहुत देर नहीं बैठ सकते न। बंधा कैसे बनता फिर। कभी मजदूर पूछते-तू रोज़ क्यों आता है? तेरे बब्बा जानेंगे तो नाराज़ होंगे। मैं चुप रहता। क्या कहता? कि मुझे यह सब देखना अच्छा लगता है। सीखना चाहता हूँ कि बाँध कैसे बनता है, पसीना कैसे बरसात को बुलाता है? सबकी आँखों में इंतज़ार था। कोई कहता-बरसात आए तो धान बो दूँगा। कोई-कुआँ भर जाए तो बेटी की शादी कर दूँगा। कोई-पहले जान बच जाए, फिर काम देखेंगे। उनके पास सपना छोटा था, पर पसीना बड़ा। वे गीत और विनोद में थकान को थका देते। गाँव में ऐसे ही जिया जाता है।

एक दिन मिट्टी खोदते हुए एक मजदूर को साँप मिला। सब भागे। मैं वहीं खड़ा रहा। सांप भी। साँप आँखों से आँखों में देखता रहा होगा। कोई रहस्य कह रहा होगा। फिर झाड़ियों में घुस गया। शायद बोलकर गया हो-बारिश आएगी। हमने सिरनहीं हिलाया। साँप की भविष्यवाणी सुनते तब न हिलाते। बिना सुने हिलाते तो सब हंसते। धीरे-धीरे बाँध ऊँचा हुआ। पत्थरों की कतारें पहाड़ की छाती पर उठकर वहां बैठ रही जैसी। हम आसमान देखते। पर आकाश नीला और कठोर था।

पिता जी प्राथमिक विद्यालय में मास्टर थे। जल्दी में सब माटसाब कह कर बुलाते। जानते थे कि मैं मजदूरों के साथ जाता हूँ। वे चुप रहते। माटसाबकी चुप्पी को मैं अनुमति मान लेता। मान लेना ठीक रहता है। वे न रोकते,न बुलाते। पर मुझे लगता था कि वे सब जानते हैं। उनके भीतर चिंता भी रही होगी और गर्व भी रहा होगा। पता नहीं। कभी बताया नहीं उन्होंने। मैं डरता था। बाप से डरना भी आवश्यक माना जाता है। इसलिए डरता था। शाम को घर लौटते समय, बिना पूछे ही उनकी आँखें पढ़ लेता। वे नहीं कहते-थक गया? पर उनके मौन में वह प्रश्न था। मैं भी नहीं कहता-थक गया। पर मेरी चुप्पी में उत्तर था। यही उनका ढंग था-बोलकर नहीं, मौन में सब जान जाना। मौन में प्रश्न, मौन में उत्तर। मौन में गुस्से से कूट भी देते हों, शायद। बाप का मौन बेटे को गंभीरता से लेने का नियम है। कूटे हुए मान लेते थे, अपने को। हम।

गर्मी चरम पर थी। कुएँ सूख चुके थे। औरतें घड़ों के लिए झगड़तीं। जानवर जीभ बाहर निकालकर हाँफते। आसमान नीला और कठोर। फिर एक दिन आसमान ने करवट बदली। बादल घिर आए। हवा बदल गई। मिट्टी में भीगने की गंध फैल गई। मजदूर आसमान की ओर देखने लगे। किसी ने दोनों हाथ जोड़ दिए। पहली बूंद गिरी। पत्थर पर पड़ी और बाँध ने साँस ली। फिर दूसरी, तीसरी... और अचानक मूसलाधार बारिश। लोग नाचने लगे। पसीने और धूल से भीगे शरीर अब पानी में भीग गए। बाँध का खाली पेट भरने लगा। पानी नीचे से ऊपर चढ़ा। उम्मीद अब सच थी। मैं भीगते-भीगते सोच रहा था-यह बाँध सिर्फ़ पानी नहीं रोक रहा, यह हम सबको जोड़ रहा है। हर पत्थर में मजदूर का पसीना,हर मिट्टी में उनकी साँस। हर बूंद में हमारी प्रतीक्षा।

बरसात कई दिनों तक चली। बाँध भर गया। गाँव के कुएँ धीरे धीरे जीने लग रहे थे। बरसात में खेतों में धान लहलहाने लगी। रबी की और भी फसलें। बच्चे बाँध पानी में तैरने जाने लगे। पेट में डूब गए वे ठूँठ भी, जिनकी फुटान की छाया में हम रोटी खाते थे। छूले की छाया अब पानी के नीचे थी। बिच्छू, साँप, सब छिप गए थे। लगा जैसे यादें भी पानी में डूब गई हों और वहीं नई जड़ें जमा रही हों। बाँध बन गया था-और उसके साथ मैं भी बदल गया था। मजदूरी सिर्फ़ काम नहीं, जीवन का पाठ है। पत्थर सिर्फ़ पत्थर नहीं होते, उनमें भविष्य का जल छिपा होता है। पसीना सिर्फ़ पसीना नहीं होता-वह बादल बुलाने का मंत्र है। पिता की चुप्पी ही शिक्षा थी, और बाँध मनुष्य की सामूहिक जिद का रूप था।

-अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय,
(भारतीय वन सेवा से सेवानिवृत्त तथा वर्तमान में राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान में विजिटिंग प्रोफेसर)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धान्त' से प्रेरित हैं)

पर्यटन संस्कृति का हो प्रसार

27 सितम्बर, विश्व पर्यटन दिवस पर विशेष.....

डॉ. अरुणा व्यास

भारत आने वाला हर तीसरा पर्यटक राजस्थान आता है। इसकी खास वजह यहां के चित्ताकर्षक पर्यटन स्थल तो है ही साथ ही वह अपनापे की संस्कृति भी है जिसमे पावणों यानी मेहमानों के लिए विशेष आदर भाव है। और फिर पर्यटन की जितनी विविधता राजस्थान में है उतनी किसी दूसरे प्रदेश में नहीं। समुद्र और बर्फ के अलावा सब कुछ तो है राजस्थान के पर्यटन में। दूर तक फैले रेत के धोरे, किले, महलों के साथ ही झीलें, कलात्मक स्थापत्य से संपन्न बावड़ियां और तालाबों के अलावा अरावाली की पर्वत श्रृंखला से जुड़े पर्यटन स्थल यहां आने वाले पर्यटकों को अपने सौन्दर्य से मुग्ध करते है। गौरवमयी इतिहास से जुड़ी कथा-कहानियां, रंग-रंगीली संस्कृति और उत्सवप्रिय यहां के लोगों की आवभगत आने वाले पर्यटकों को अपना बना लेती है। यही कारण है कि सुदूर देशों से पर्यटक एक बार यहां आता है तो फिर बार-बार आता है।

राजस्थान में पर्यटन की परम्परा आरंभ से ही रही है। तब से ही जब रियासतों का एकीकरण नहीं हुआ था। राजा-महाराजाओं ने पर्यटन के महत्व को देखते हुए ही अपने किले-महलों के द्वार सुदूर देशों से आने वाले पर्यटकों के लिए खोल दिए थे। बाद में जब रियासकों का एकीकरण हुआ तो बड़ा संकट उन राजपूत ठिकानेदारों के सामने यह भी खड़ा हो गया कि कैसे बड़े-बड़े किले-महलों की सार संभाल करें। प्रदेश के मुख्यमंत्री और बाद में देश के उपराष्ट्रपति रहे स्व. भैरोसिंह की पहल से तब एक महत्वपूर्ण पहल राजस्थान में 'हेरिटेज होटल' योजना के अंतर्गत हुई। 75 वर्ष से पुरानी हवेली, किले महल आदि को 'हेरिटेज' की श्रेणी में रखते पर्यटन की दृष्टि से उनके संवर्द्धन और विकास पर रियायतें, अनुदान की शुरूआत हुई और देखते ही देखते प्रदेशभर में हेरिटेज होटलों की एक श्रृंखला बनती चली गई। आज भी देशभर में सर्वाधिक 'हेरिटेज होटल' राजस्थान में हैं। इससे न केवल हमारी ऐतिहासिक धरोहरों को संजोया जा सका बल्कि पर्यटन की दृष्टि से भी राजस्थान में आकर्षण में तेजी से इजाफा हुआ।

यह सही है, पर्यटन की प्रदेश में अभी भी अपार संभावनाएं हैं। एशिया के छठे बेस्ट होलीडे डेस्टिनेशन होने के बावजूद जितनी आय पर्यटन से राजस्थान को होनी चाहिए हो नहीं रही है। जरूरत इस बात की है कि प्रदेश की पर्यटन क्षमताओं को दृष्टिगत रखते हुए पर्यटन की स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप नीतियां बने। इसके लिए सबसे बड़ी जरूरत पर्यटन शिक्षा के ढांचे को सुदृढ करने की भी है। उद्योग के रूप में पर्यटन कैसे संचालित हो, इस पर तो वर्तमान पर्यटन शिक्षा में जोर है परन्तु तीर्थाटन से पर्यटन की हमारी विरासत वहां नदारद है। घुमक्कड़ी से जुड़ा भारतीय दर्शन वहां बहुत से स्तरों पर नहीं है। यह होगा तभी हम संस्कृति के संरक्षण के साथ पर्यटन का प्रभावी विकास कर पाएंगे। यह समझे जाने की जरूरत है कि पर्यटन जन उद्योग है, इसका संचालन अन्य उद्योगों की भांति नहीं किया जा सकता। इसके लिए आम जन को जोड़ना अधिक जरूरी है।

जरूरी यह भी है कि राज्य में उपलब्ध पर्यटन सुविधाओं का व्यावहारिकता के स्तर पर आकलन कर उनका विकास किया जाए। अभी चिर-परिचित स्थानों के विपणन पर तो बहुत कुछ किया जा रहा है परन्तु बहुत से कम जाने-पहचाने स्थानों के विकास पर ध्यान नहीं है। उन पर ध्यान दिए जाने की जरूरत है। जालोर का किला, सुंधा माता का रोपवे, परमारकालीन संस्कृत पाठशाला, चूरू, नवलगढ़ की हवेलियां, बांसवाड़ा में आथूणा के मंदिर, बाड़मेर में किराडू का शिल्प सौन्दर्य, बीकानेर में गजनेर, उदयपुर में जयसमंद और रूठी रानी के महल, अलवर में भानगढ़, भरतपुर के जल महल और ऐसे ही बहुत से और पर्यटन आकर्षण है, जो पर्यटन मानचित्र पर ठीक से उभरे नहीं है। इनके विकास के साथ ही पर्यटन पथों का इस तरह से विकास किए जाने की जरूरत है कि पर्यटक पैकेज के रूप में कम परिचित स्थानों का दृश्यावलोकन कर सके। इसके साथ ही धार्मिक और घरेलू पर्यटन पर भी विशेष रूप से ध्यान दिए जाने की जरूरत है। जरूरत इस बात की भी है कि राज्य सरकार अपने कर्मियों को पर्यटन के लिए प्रोत्साहित करने की नीति पर भी कार्य करे। इन्टरनेट को टूरनेट के रूप में विकसित करने की पहल करें। पर्यटन केन्द्रों पर लेखकों, पत्रकारों की यात्रा भी इस दिशा में सकारात्मक पहल हो सकती है। लेखक, पत्रकारों को कम परिचित पर्यटन स्थलों पर ले जाए जाए। वे वहां जाएंगे तो उन स्थानों के सौन्दर्य और संभावनाओं पर लिखेंगे, स्वाभाविक ही है कि जितना खर्च उनके विज्ञान पर नहीं खर्च करना पड़ेगा उससे अधिक सरकार का प्रचार हो जाएगा। मूल बात है कि हम राज्य के पर्यटन का विपणन इस रूप में करें कि देशी-विदेशी पर्यटकों के आकर्षण के साथ ही यहां की उन पर्यटन क्षमताओं का भी अधिकाधिक दोहन हो सकें, जिन पर अभी तक ध्यान नहीं दिया गया है। इसी से पर्यटन में राजस्थान देशभर में अग्रणी हो सकता है।

-डॉ. अरुणा व्यास,
पर्यावरण और संस्कृति अध्येता।

ग्रामीण पर्यटन : किलों और महलों से आगे बढ़ता राजस्थान

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा का नया विजनः मरुधरा के गांवों की चौपाल और संस्कृति से खुलेगा समृद्धि का नया द्वार

अलका सक्सेना

राजस्थान की माटी केवल किलों और महलों के साथ ही इसके गांवों की चौपालों, खेतों की मेड़ों और लोक कलाओं में भी एक जीवंत संस्कृति रचती है। इसी समृद्ध विरासत को विकास की नई धारा से जोड़ते हुए मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा ने राज्य में ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने का एक ऐतिहासिक और अभिनव विजन प्रस्तुत किया है। उनके नेतृत्व में राजस्थान सरकार ने पर्यटन को महज पत्थरों की ऐतिहासिक इमारतों और प्रमुख शहरों तक सीमित रखने के बजाय प्रदेश की वास्तविक आत्मा-हमारे गांवों-तक पहुँचाने का अभूतपूर्व प्रयास किया है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के इस दूरदर्शी प्रयास ने न केवल मरुधरा के पारंपरिक पर्यटन को एक नया और व्यापक आयाम दिया है, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था, स्थानीय कला, कृषि और युवाओं के लिए स्वरोजगार का एक सशक्त मार्ग भी प्रशस्त किया है।

पर्यटन आज केवल यात्रा या मनोरंजन का साधन मात्र नहीं रह गया है; यह आर्थिक स्वावलंबन, स्थानीय उद्यिमता और व्यापक सामाजिक बदलाव का एक अत्यंत सामर्थ्यवान माध्यम बन चुका है। राजस्थान वैश्विक पर्यटन मानचित्र पर सदैव आकर्षण का केंद्र रहा है। यहाँ के विशाल किले, हेरिटेज संपदाएँ और मरुस्थलीय सौंदर्य देश-दुनिया के पर्यटकों को लुभाते रहे हैं। परंतु, मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की सोच ने इस बात को रेखांकित किया कि राजस्थान का असली सांस्कृतिक वैविध्य और सजीवता इन ऐतिहासिक स्मारकों की परिधि से आगे, गांवों के सहज जीवन-प्रवाह में बसती है।

गांवों की जीवंत धरोहर और पर्यटन का नया क्षितिज -राजस्थान के गांवों में लोक संगीत की तान, खड़ताल और सारंगी की गूंज, कालबेलिया व घूमर नृत्य, कठपुतली कला, बंधेज व हस्तशिल्प, पारंपरिक व्यंजन, मेलों-त्योहारों की रंगत, कृषि परंपराएं और ग्रामीण आतिथ्य जैसी अदम्य सांस्कृतिक धरोहरें पीढ़ियों से संजोई गई हैं। गांवों में बसी इस जीवित विरासत को केवल संठाहालयों के कांच के शोकेस में सहेज कर नहीं रखा जा सकता; इसका वास्तविक अनुभव तभी संभव है जब पर्यटक इसे इसके मूल परिवेश में-खेत-खलिहानों, मिट्टी की सोंधी महक और चौपालों में-प्रत्यक्ष महसूस करे। यह पहल पर्यटक को महज दर्शक न बनाकर गांव के जीवन का भागीदार बना देती है। खेत, चौपाल, मिट्टी के घर, स्थानीय व्यंजन, पशुपालन और लोक गाथाएं मिलकर एक ऐसा अविस्मरणीय अनुभव रचते हैं, जो पर्यटकों के मन पर छाप छोड़ता है।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की इस दूरगामी सोच का मुख्य ध्येय यह है कि पर्यटन से अर्जित होने वाला आर्थिक लाभ केवल बड़े शहरों या बड़े होटल समूहों तक सीमित न रहे, बल्कि उसका प्रत्यक्ष फायदा सीधे गांव के किसान, शिल्पकार, लोक कलाकार, महिलाओं और युवाओं तक पहुंचे। इस सोच को राजस्थान ग्रामीण पर्यटन योजना तथा राजस्थान पर्यटन नीति-2025 के माध्यम से एक सुदृढ़ नीतिगत और व्यावहारिक आधार प्रदान किया गया है। राजस्थान पर्यटन नीति-2025 में विविधीकरण, आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर, सतत विकास, निवेश और कौशल विकास पर जोर दिया गया है। साथ ही राजस्थान ग्रामीण पर्यटन योजना के अंतर्गत ग्रामीण क्षेत्रों में विशेष पर्यटन इकाइयों के विकास को प्रोत्साहित किया जा रहा है। पर्यटकों को प्रामाणिक ग्रामीण परिवेश में ठहराने और स्थानीय आतिथ्य का सीधा अनुभव कराने की व्यवस्था है। कैंपिंग साइट्स एवं एडवेंचर इकाईयों के ग्रामीण परिदृश्य में प्रकृति के समीप साहसिक व सांस्कृतिक गतिविधियों का संचालन आकर्षण केन्द्र है।

इन प्रावधानों का मूल उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में स्थायी रोजगार का सृजन करना और स्थानीय संसाधनों तथा हुनर को आर्थिक अवसरों में बदलना है। इस पहल से किसान, शिल्पकार, लोक कलाकार, ग्रामीण युवा और विशेषकर महिलाएं पर्यटन की मुख्यधारा से जुड़कर आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रही हैं। ग्रामीण पर्यटन की सबसे बड़ी शक्ति यह है कि यह हमारी सांस्कृतिक विरासत को सीधे आजीविका और अर्थव्यवस्था से जोड़ देता है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के इस मॉडल से एक स्थानीय शिल्पकार को अपने हस्तशिल्प का उचित मूल्य और खरीदार गाँव में ही मिल जाता है। लोक कलाकारों को अपनी प्रतिभा के प्रदर्शन के लिए अपने घर के समीप मंच और सम्मान प्राप्त होता है, किसान के लिए कृषि पर्यटन अतिरिक्त आय का जरिया बनता है, और ग्रामीण परिवारों के लिए होमस्टे स्वरोजगार का माध्यम बनता है।

राज्य सरकार द्वारा स्थानीय लोक कलाकारों, शिल्पकारों तथा ग्रामीण स्टार्ट-अप्स को प्राथमिकता देने और वित्तीय प्रोत्साहन प्रदान करने के निर्णयों से ग्रामीण क्षेत्रों में निवेश का मार्ग सुगम हुआ है। इसके साथ ही, मुख्यमंत्री की प्राथमिकताओं के अनुरूप ग्रामीण क्षेत्रों को मुख्य पर्यटन सर्किट से जोड़ने के लिए सड़कें, बिजली, पानी, स्वच्छता, इंटरनेट कनेक्टिविटी, सुरक्षा और दिशा-सूचक बोर्ड जैसी आधारभूत सुविधाओं का भी समानांतर विकास किया जा रहा है। आधुनिकता और शहरी पलायन के इस दौर में ग्रामीण पर्यटन हमारी संकटापन्न लोक कलाओं और पारंपरिक कला-कौशल को नया जीवन दे रहा है। जब किसी पारंपरिक कला या उत्पाद की मांग बढ़ती है, तो उससे जुड़ा हुनर जीवित रहता है। जब नई पीढ़ी यह देखती है कि उनकी अपनी सांस्कृतिक विरासत से उन्हें सम्मान और आजीविका दोनों मिल सकते हैं, तो वे पलायन के बजाय अपने गाँव में रहकर ही उद्यमी बनने के लिए प्रेरित होते हैं।

महिलाओं की भागीदारी इस पूरी प्रक्रिया को सामाजिक सशक्तीकरण में बदल रही है। पारंपरिक खान-पान, हस्तशिल्प, होमस्टे संचालन और आतिथ्य सेवाओं के माध्यम से ग्रामीण महिलाएं आर्थिक रूप से स्वावलंबी बन रही हैं। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के इन अभिनव प्रयासों की ही परिणति है कि राजस्थान के इन प्रयासों को राष्ट्रीय स्तर पर भी सराहा गया है। वर्ष 2024 में जयपुर में आयोजित इंडिया ट्रैवल मार्ट में राजस्थान पर्यटन को ग्रामीण पर्यटन को प्रोत्साहन - गाँव की हवेली, गांव का घर श्रेणी में सम्मानित किया गया, जो इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि राजस्थान की पर्यटन यात्रा अब राजसी महलों से आगे बढ़कर गांव की चौपालों तक सफलतापूर्वक पहुंच रही है।

ग्रामीण पर्यटन की सफलता का मूल मंत्र नीति, संस्कृति और समुदाय का समन्वय है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के दूरदर्शी नेतृत्व में राजस्थान ने यह साबित कर दिखाया है कि गांवों को शहरों की प्रतिकृति बनाए बिना भी उनकी मौलिक पहचान, मिट्टी की सोंधी महक और पारंपरिक आतिथ्य के साथ उन्हें वैश्विक पर्यटन मानचित्र पर स्थापित किया जा सकता है। राजस्थान की पहचान जितनी उसके अजर-अमर किलों और महलों से है, उतनी ही उसके गांवों की पावन माटी और आतिथ्य सत्कार से भी है। मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा के इन अभिनव प्रयासों के बदौलत अब वह समय आ गया है जब दुनिया राजस्थान को केवल दूर से देखे ही नहीं, बल्कि उसके गांवों में रहकर सच्चे और जीवंत राजस्थान को अनुभव करे।

-अलका सक्सेना,
अतिरिक्त निदेशक जनसंपर्क (सेनि.)

50 साल पुराने कुएं को राजस्व रिकॉर्ड में स्थान मिला

मांडल तहसील कार्यालय में आयोजित राजस्व शिविर में प्रकरण का निस्तारण किया

भीलवाड़ा, (निसं)। विकसित भारत जन सेवा अभियान के तहत सेवा सेतु अभियान के अंतर्गत आयोजित शिविर आमजन की वर्षों पुरानी समस्याओं के समाधान का माध्यम बन रहे हैं। मांडल तहसील कार्यालय में आयोजित राजस्व शिविर में एक लंबे समय से लंबित प्रकरण का निस्तारण करते हुए करीब 50 साल पुराने कुएं को राजस्व रिकॉर्ड में दर्ज करने की कार्रवाई की गई।

शिविर में प्रकरण सामने आने पर तहसीलदार एवं शिविर प्रभारी नीरज रावत ने पटवारी रिपोर्ट एवं उपलब्ध राजस्व दस्तावेजों की गहनता से जांच करवाई। जांच में खातेदारी भूमि में

> **■ शिविर में पटवारी रिपोर्ट एवं उपलब्ध राजस्व दस्तावेजों की जांच करवाई**

स्थित पुराने कुएं के संबंध में आवश्यक तथ्य सामने आने के बाद इसे राजस्व रिकॉर्ड में दर्ज करने के आदेश दिए गए। तहसीलदार ने संबंधित अधिकारियों को खसरा एवं जमाबंदी अभिलेखों में आवश्यक शुद्धि कर रिकॉर्ड को अपडेट करने के निर्देश दिए, जिससे वर्षों से लंबित मामला विधिवत दर्ज होकर निस्तारित हो सका।

इस कार्रवाई से रतनलाल, सांवरलाल, रामचंद्र एवं शिवशंकर लुहार आदि को लम्बे समय बाद बड़ी राहत मिली। वर्षों से लंबित राजस्व प्रकरण का शिविर में समाधान होने पर लाभार्थियों ने राज्य सरकार की जनसेवा की पहल एवं प्रशासन का आभार व्यक्त किया।

राशिफल रविवार 27 सितम्बर, 2026

पंडित अनिल शर्मा

अश्विन मास, कृष्ण पक्ष, प्रतिपदा तिथि, रविवार, विक्रम संवत-2083, उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र दिन 11:08 तक, वृद्धि योग दिन 11:17 तक, बालव करण प्रातः 9:39 तक, चन्द्रमा आज मीन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति- सूर्य-कन्या, चन्द्रमा-मीन, मंगल-कर्क, बुध-कन्या, गुरू-कर्क, शुक्र-तुला, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह

आज सर्वार्थ सिद्धि योग सूर्योदय से दिन 11:08 तक है। आज से पितृपक्ष महालय श्राद्ध आरम्भ होगा। आज प्रतिपदा का श्राद्ध, पंचक है। आज क्षमावाणि पर्व और पड़वा ढोक (जैन) है।

श्रेष्ठ चौघड़िया- चर 7:50 से 9:19 तक, लाभ अमृत 9:19 से 12:18 तक, शुभ 1:47 से 3:16 तक,

राहुकाल- 4:30 से 6:00 तक, सूर्योदय 6:21, सूर्यास्त 6:15

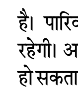

मेष
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। आज मन में असंतोष बना रहेगा।

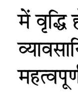

वृष
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। आज महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

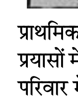

मिथुन
अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आज प्रयासों में उचित सफलता मिल सकती है। परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा।

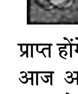

कर्क
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आज आवश्यक कार्यों के लिए बाहर जाना हो सकता है।

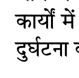

सिंह
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा में दुर्घटना का भय है।

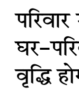

कन्या
परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। घर-परिवार में सुख-सुविधाओं में वृद्धि होगी।

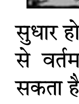

तुला
स्वास्थ्य में सुधार होगा। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। परिवार में आपसी सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।

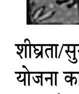

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

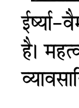

धनु
परिजनों के व्यवहार के कारण दुःख हो सकता है। आपसी ईर्ष्या-वैमनस्यता के कारण परेशानी हो सकती है। महत्वपूर्ण मामलों में दुविधा बनी रहेगी। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

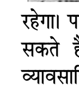

मकर
घर-परिवार में अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

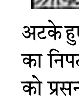

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक विवादों का निपटारा हो सकता है। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

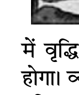

मीन
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है।